इकाई 2. आरण्यक – अर्थ, परिचय एवं वर्ण्यविषय

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

वेदाड्ग एवं आरण्यकों के परिचय से सम्बन्धित खण्ड की यह दूसरी इकाई है। इसके पूर्व की इकाई में आपने वेदाड्गों का परिचय प्राप्त किया है।
इस इकाई में आरण्यक के अर्थ एवं परिचय सहित प्रतिपाद्य भी आपके अध्ययनार्थ प्रस्तुत है।

ऋषि परम्परा ने अरण्य में ब्रह्मचर्य धारण कर जिस गम्भीर व चिन्तनपूर्ण विद्या का उपार्जन या अध्ययन किया उसी को आरण्यक कहते है। किन्तु आचार्य सामण ने कहा है कि जंगल में रहने वानप्रस्थी जिन यज्ञादि कार्यो को करते थे, उन्हीं का वर्णन करने वाले ग्रन्थों को आरण्यक कहते है अथवा अरण्य में पढाये जाने के योग्य होना भी आरण्यक कहला सकता है। सभी आरण्यक ब्राह्मण ग्रन्थों के परिशिष्ट है। इनका प्रतिपाद्य ब्रह्मविद्या का विवेचन तथा यज्ञों का गूढ रहस्य बताना रहा है। इसके अतिरिक्त प्राणविद्या का विवेचन आरण्यकों का विशिष्ट विवेचन रहा है। अतःप्रस्तुत इकाई का अध्ययन कर लेने के पश्चात आप प्रपण और उपासना का उचित स्थान, गृहस्थों के लिए विहित कर्मकाण्डों एवं अधिदैविक रूप को समझाते हुए ज्ञान एवं कर्म के समुच्चय को बता सकेगें।

2.2 उद्देश्य

आरण्यक के अर्थ, परिचाय एवं वर्णय विषय के वर्णन से सम्बन्धित इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप–
1. आरण्यक शब्द का अर्थ बता सकेगें।
2. आरण्यक ग्रन्थों के प्रतिपाद्य को समझा सकेगें।
3. गृहस्थों के कर्मकाण्ड को बता सकेगें।
4. ब्रह्मविद्या के स्वरूप पर प्रकाश डाल सकेगें।
5. प्राणविद्या के अध्ययन को समझा सकेगें।

2.3 आरण्यक का अर्थ एवं परिचय

ऋषियों ने जनशून्य अरण्य में ब्रह्मचर्य में रत होकर जिस गम्भीर और चिन्तन–पूर्ण विद्या का अध्ययन किया,उसी विद्या को 'आरण्यक' कहते हैं। सायण ने ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य में लिखा है कि ''एकान्त अरण्य में रहने वाले वानप्रस्थ लोग जिन यज्ञादिकों को करते थे, उनको बताने वाले ग्रन्थों को 'आरण्यक' कहते हैं।'' इसी प्रकार उन्होंने ऐतरेय–आरण्यक भाष्य में कहा है कि ''अरण्य में पढ़ाये जाने के योग्य होने के कारण इसे 'आरण्यक' कहते हैं।''
अरण्य एवं पाठ्यत्वादारण्यक मितीर्यते। (ऐतरेय आरण्यक, सायणभाष्य)

तैत्तिरीयारण्यक के भाष्य में भी सायण ने कहा है कि ''जिस विद्या को अरण्य में पढ़ा या पढ़ाया जाय, उसे 'आरण्यक' कहते हैं।''

अरण्याध्ययनादेतदारण्यक मितीर्यते।
अरण्ये तदधीयीतेत्येवं वाक्यं प्रचक्ष्यते।।

(तैत्तिरीयाण्यक, सायणभाष्य, श्लोक 6)

इस प्रकार आरण्यकों के अध्ययन, मनन एवं चिन्तन के लिए अरण्य का एकान्त शान्त वातावरण ही उपयुक्त समझा जाता था। ग्राम्य का वातावरण उसके लिए कथमपि उपयुक्त नहीं था। ओलडनबर्ग का कथन है कि ''आरण्यक ग्रन्थ वे हैं, जिनका प्रतिपाद्य विषय सूक्ष्म अध्यात्मवाद होने के कारण वे गुरु द्वारा अरण्य के एकान्त वातावरण में ही

अधिकारी शिष्य को दिये जा सकते थे। नगर का वातावरण आरण्यकों में प्रतिपादित गूढ़ विद्या की प्राप्ति के लिए योग्य नहीं समझा जाता था।''संस्कृत साहित्य का इतिहास (मैक्डॉनल), पृ0 190 आरण्यकों को रहस्य ग्रन्थ भी कहते हैं क्योंकि आरण्यक यज्ञ के गूढ़ रहस्यों का प्रतिपादन करते हैं, आध्यात्मिक तथ्यों की यथार्थ मीमांसा करते हैं, ब्रह्मविद्या का अभिधान करते हैं।

2.4 आरण्यकों के वर्ण्यविषय

आरण्यक ब्राह्मण–ग्रन्थों के ही परिशिष्ट भाग हैं, किन्तु ब्राह्मणों से वैशिष्ट्य दिखाने के लिए इसे 'रहस्य' भी कहते हैं, क्योंकि इसका स्वरूप रहस्यमय है। इसका अध्ययन–अध्यापन अरण्य में ही होता था, इसलिए इसे 'आरण्यक' कहते हैं। आरण्यकों का मुख्य विषय ब्रह्म–विद्या का विवेचन तथा यज्ञों के गूढ़ रहस्य का प्रतिपादन करना है। आरण्यकों में यज्ञों के आध्यात्मिक एवं तात्त्विक स्वरूप का विवेचन किया गया है। आरण्यकों के अनुसार यह जगत् यज्ञमय है और यज्ञ ही समस्त विश्व का नियन्ता है। प्राणविद्या का विवेचन ही आरण्यकों का विशिष्ट विषय है। इसके अध्ययन एवं उपासना के लिए अरण्य का एकान्त शान्त स्थान ही उपादेय समझा जाता था। आरण्यकों के अनुसार प्राण ही समस्त विश्व का आधार है। यह सारा जगत् प्राण से ही आवृत्त है। संसार के समस्त प्राणी प्राण के द्वारा ही विधृत हैं।   ऐतरेय आरण्यक 2/1/6

आरण्यकों में वर्णाश्रम धर्म का पूर्ण विकास देखा जाता है। डॉ0 राधाकृष्णन् का कथन है कि ''गृहस्थों के लिए विहित कर्मकाण्डों का विवेचन ब्राह्मण ग्रन्थों में है और वानप्रस्थों के लिए चिन्तन और मनन के विषय आरण्यकों में पाये जाते हैं।'' भारतीय दर्शन (राधाकृष्णन्)

मुख्यतः इनमें आध्यात्मिक तत्त्वों का विवेचन है और आधिदैविक रूप का विवरण भी। इनमें ज्ञान और कर्म दोनों का समुच्चय है जिनका विकास उपनिषदों में देखा जाता है।

ऐतरेय आरण्यक – ऐतरेय आरण्यक ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है। सत्यव्रत सामश्रमी ने 1876 ई0 में सायण भाष्य के साथ इसका प्रकाश किया था। तदनन्तर 1909 ई0 में ए0बी0 कीथ ने अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्रकाशत किया। षड्गुरुशिष्य ने इस पर 'मोक्षप्रदा' टीका लिखी थी, किन्तु वह अभी तक प्रकाशित नहीं हुई है।

ऐतरेय आरण्यक में पाँच भाग हैं, जिन्हें आरण्यक कहा जाता है। प्रथम आरण्यक में पाँच अध्याय, द्वितीय में सात, तृतीय में दो, चतुर्थ में एक और पञ्चम आरण्यक में तीन अध्याय हैं। इस प्रकार कुल अठारह अध्याय हैं। इस आरण्यक के प्रथम आरण्यक में महाव्रत का विवेचन है, जो ऐतरेय ब्राह्मण के 'गवामयन' का ही एक अंश है। द्वितीय आरण्यक के प्रथम तीन अध्यायों में उक्थ, प्राण, विद्या और पुरुष का वर्णन है। चार से लेकर छः अध्यायों में ऐतरेय उपनिषद् है। तृतीय आरण्यक संहितोपनिषद् है, जिसमें संहिता, क्रम एवं पद पाठों का वणन तथा स्वर–व्यञ्जन आदि के स्वरूप का विवेचन है। इसमें निर्भुज (संहिता), प्रतृष्ण (पद), सन्धि, संहिता आदि पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। चतुर्थ आरण्यक अत्यन्त छोटा है। इसमें महाव्रत के पाँचवें दिन में प्रयुक्त होने वाली कुछ महानाम्नी ऋचाएँ संकलित की गयी हैं। पञ्चम् आरण्यक में महाव्रत के माध्यन्दिन सवन में पढ़े जाने वाले 'निष्कैवल्यशास्त्र' का विवेचन है। ऐतरेय आरण्यक के प्रथम तीन आरण्यकों के प्रणता महिदास ऐतरेय, चतुर्थ के आश्वनायन और पञ्चम के शौनक है।

शांखायन आरण्यक – ऋग्वेद का दूसरा आरण्यक शांखायन आरण्यक है, जिसे 'कौषीतकि आरण्यक' भी कहते हैं। सन् 1922 ई0 में श्रीधार पाठक ने सम्पूर्ण शांखायन ब्राह्मण को प्रकाशित किया है। इसमें कुल पन्द्रह अध्याय और 137 खण्ड हैं। इसके प्रथम दो अध्यायों को ब्राह्मण का भाग माना जाता है। तीन से लेकर छः अध्याय तक 'कौषीतकि उपनिषद्' कहा जाता है। इसका वर्ण्यविषय सामान्यतः ऐतरेय आरण्य के

समान ही है। इसके षष्ठ अध्याय में कुरुक्षेत्र, मत्स्य, उशीनर, काशी, पाञ्चाल, विदेह आदि प्रदेशों का उल्लेख है। त्रयोदश अध्याय में उपनिषदों से अनेक उद्धरण लिये गए हैं। इसमें महाव्रत आदि कृत्यों का विवेचन किया गया है।

वृहदारण्यक – शुक्लयजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखों के अन्तिम छः अध्यायों को 'बृहदारण्यक' कहते हैं। इसका प्रथम प्रकाश **1889** ई0 में ओटो वोहट्लिङ्क ने किया था। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों का मिश्रण है। इसमें बीच–बीच में यज्ञों का रहस्य वर्णन किया गया है, अतः इसे 'आरण्यक' कहते हैं, किन्तु इसमें आत्मतत्त्व का विस्तृत उपदेश दिया गया है, इस प्रकार उपनिषद् का अधिक वर्णन होने के कारण इसे 'उपनिषद्' भी कहते हैं। इस प्रकार इसका नाम 'बृहदारण्यकोपनिषद्' भी है।माध्यन्दिन और काण्व दोनों ही शाखाओं के बृहदारण्यकों में याज्ञवल्क्य और जनक का सम्वाद तथा मैत्रेयी एवं गार्गी दोनों ब्रह्मवादिनी नारियों का आख्यान वर्णित है। प्रथम अध्याय में अश्वमेध यज्ञ का रहस्य समझाया गया है।

तैत्तिरीय आरण्यक – कृष्णयजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का आरण्यक 'तैत्तिरीय आरण्यक' है। राजेन्द्रलाल मिश्र ने 1872 ई0 में सायण भाष्य के साथ इसे प्रकाशित किया था। 1898 ई0 में एच्0एन्0 आप्टे ने इसका दूसरा संस्करण निकाला। इसमें कुल दस प्रपाठक या परिच्छेद हैं। प्रत्येक प्रपाठक में कई अनुवाक हैं। अनुवाकों की संख्या कुल 170 है। सप्तम से लेकर नवम प्रपाठक तक को 'तैत्तिरीयोपनिषद्' कहते हैं और दशम प्रपाठक को 'महानारायणीयोपनिषद्' कहा जाता है, जिसे तैत्तिरीय आरण्यक का परिशिष्ट माना जाता है।तैत्तिरीय आरण्यक के प्रथम प्रपाठक में अग्नि की उपासना और इष्ट का चयन वर्णन है। द्वितीय प्रपाठक में स्वाध्याय तथा पञ्च महायज्ञों का वर्णन किया गया है। तृतीय प्रपाठक में चतुर्होम चिति के उपयोगी मन्त्रों का वर्णन है। चतुर्थ प्रपाठक में प्रवर्ग्य के उपयोगी मन्त्रों का वर्णन है और इसी में अनेक अभिचारपरक मन्त्र भी वर्णित हैं। पञ्चम प्रपाठक में यज्ञीय संकेत प्राप्त होते हैं। षष्ठ प्रपाठक में पितृमेध सम्बन्धी मन्त्रों का वर्णन है। इसके अनेक मन्त्र ऋग्वेद से संगृहीत हैं। सप्तम से नवम तक 'तैत्तिरीयोपनिषद्' है। दशम प्रपाठक महानारायणीयोपनिषद् है, जिसे खिल कहते हैं। तैत्तिरीय आरण्यक में कुरुक्षेत्र, खण्डव, पाञ्चाल, मत्स्य, काशी आदि भौगोलिक नामों का उल्लेख है।इसमें 'श्रमण' शब्द का प्रयोग तपस्वी के अर्थ में किया गया है। बौद्ध भिक्षु के अर्थ में इसका प्रयोग करते हैं। इसमें यज्ञोपवीत का प्रथम उल्लेख मिलता है। यज्ञोपवीतधारी व्यक्ति के द्वारा किया
गया यज्ञ ही स्वीकार किया जाता है और यज्ञोपवीतधारी जो कुछ अध्ययन करता है, वह सब यज्ञ
ही है। **प्रसृतो ह वै यज्ञोपवीतिनो यज्ञः। यत् किञ्च ब्राह्मणो यज्ञोपवीत्यधीते यजत एव तत् (तैत्तिरीयारण्यक 2/1/1)**

तैत्तिरीय आरण्यक में जल के चार रूप बतलाये गये हैं – मेघ, विद्युत्, गर्जन और वृष्टि तथा जल के छः प्रकार बताये गये हैं–वृष्टि का जल, कूपजल, तड़ागजल, नद्यादिजल, पात्रजल और झरने का जल। **चत्वारि वा अपां रूपाणि – मेघो विद्युत् स्तनायित्नुवृष्टिः। तैत्तिरीयारण्यक** 1/24/18.**तैत्तिरीयारण्यक** 1/24/1–2

इस आरण्यक में एक ऐसे रथ का वर्णन है कि जिसमें एक हजार धुरे और कई चक्र हैं। इस रथ में एक हजार घोड़े जुतते हैं। **रथे सहस्रन्धुरं पुरश्चक्र सहस्राश्व् (वही 1/31/1)** इसमें कश्यप को सर्वदर्शक कहा गया है और व्यास पाराशर्य का उल्लेख मिलता है।

मैत्रायणी आरण्यक – कृष्णयजुर्वेद की मैत्रायणी शाखा का 'मैत्रायणी आरण्यक' है। इसे ही 'मैत्रायणी उपनिषद्' कहा जाता है। इसमें सात प्रपाठक हैं। पांचवें प्रपाठक से 'कैत्सायनी स्तोत्र' का प्रारम्भ होता है। इसमें आरण्यक और उपनिषद् दोनों के अंश मिश्रित हैं। इसमें परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है। इसमें अश्वपति, हरिश्चन्द्र, अम्बरीष, शर्याति, ययाति, युवनाश्व आदि राजाओं का उल्लेख है।

तवल्कार आरण्यक – सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध आरण्यक 'तवल्कार आरण्यक' है। इसी को जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण' भी कहते हैं। उसका प्रथम प्रकाश

1931 ई0 में एच् अर्टल ने किया था। इसमें चार अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में कई अनुवाक या खण्ड हैं। इसमें साम–मंत्रों की सुन्दर व्याख्या की गयी है। इस आरण्यक के चतुर्थ अध्याय को 'केनोपनिषद्' कहते हैं। इसका दूसरा नाम 'तवल्कार उपनिषद्' भी है।

छान्दोग्यारण्यक – यह सामवेद के ताण्ड्यब्राह्मण से सम्बद्ध आरण्यक है। सत्यव्रत सामश्रमी ने 1878 ई0 में'सामवेदर आरण्यक–संहिता' नाम से इसको प्रकाशित किया था।छान्दोग्योपनिषद् का प्रथम भाग छान्दोग्यारण्यक है।इसमें 'समान्' और 'उद्गीथ' की धार्मिक दृष्टि से व्याख्या की गई है।

अध्यास प्रश्न– निम्नलिखित में सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए–

1. ऐतरेय आरण्यक किसका परिशिष्ट है?
   क–उपनिसद का
   ख– ब्रह्मविद्या का
   ग–ऐतरेय ब्राह्मण का
   घ–कोई नही
2. मोक्षप्रदा टीका के रचयिता है–
क–राधाकृष्णन
ख– कीथ
ग– षडगुरूशिष्य
घ– महर्षि
3. ऐतरेय आरण्यक में कितने भाग है–
   क. 4 ख. 7 ग. 3 घ. 5
4. ऐतरेय आरण्यक में अध्यायों की संख्या है–
   क. 13 ख. 15 ग. 17 घ. 18
5. शांखायन आरण्यक किस वेद का है–
   क. ऋग्वेद ख. यजुर्वेद ग. सामवेद घ. यथर्ववेद
6. शुक्लयजुर्वेद का आरण्यक है–
   क. शांखायन ख. कौषितकी ग. वृहदारण्यक घ. कोई नहीं
7. याज्ञवल्क्य जनक संवाद किसमें वर्णित है–
   क. वृहदारण्यक ख. यजर्वेद ग. तैतिरीय आरण्यक घ. ऐतरेय
8. तैतिरीय आरण्यक किस वेद का है–
   क. शुक्ल यजुर्वेद ख. कृष्ण यजर्वेद ग. अर्थवेद घ. सामवेद
9. तवल्कार आरण्यक किस वेद से है–
   क. सामवेद ख. ऋग्वेद ग. यजुर्वेद घ. अर्थवेद

2.6 सारांश

इस इकाई में आपने अध्ययन किया की अरण्य में प्राप्त की जाने वाली विद्या, किये जाने वाले यज्ञादि कर्म तथा ब्रह्म विद्या के स्वरूप का विवेचन करने वाले ग्रन्थों को आरण्यक कहा गया है। महाव्रत का विवेचन प्राणविद्या और पुरूष का वर्णन ऐतरेय आरण्यक के प्रतिपाद्य है। शांखायन आरण्यक में मत्स्य, कुरूक्षेत्र, काशी, पांचाल, विदेह आदि प्रदेशों का उल्लेख किया गया है फिर भी इसका वर्ण्य विषय ऐतरेय के ही समान है। वृहदारण्यक में आत्मतत्व का विस्तृत उपदेश प्राप्त है। इसकी शैली उपनिषद शैली है। इसकी दो शाखाए –माध्यन्दिन तथा काण्व में मैत्रेयी गार्गी के आख्यान और जनक याज्ञवल्क्य के संवादों को निरूपित किया गया है। तैतरीय आरण्यक को महानारायणी उपनिषद कहा जाता है इसमें अध्गिन की उपासना आदि के वर्णन है। इसी प्रकार मैत्रामणी आरण्यक में परमात्मा को अग्नि और प्राण कहा गया है। इसमें हरिश्चन्द्र अम्वरीष आदि राजाओं का

उल्लेख है। तवल्कार और छान्दोग्य आरण्यक क्रमशः सामवेद से सम्बन्धित तथ्यों की न्याख्या करते है। अतः इस इकाई का उध्ययन कर लेने के पश्चात आप ब्रह्मविद्या, प्राणविद्या, मृहस्थ धर्म, वानप्रस्थ धर्म ,अग्निचयन, और ब्रह्मचर्य में रत होकर उपासना द्वारा विद्या प्राप्त करने की विधि को भलीभॉति समझा सकेगें।

2.7 शब्दावली

1. प्राणविद्या –उपनिषदों व आरण्यकों में प्राणों गमनागमन तथा प्रकरों का अध्ययन बताने वाली विद्या प्राणविद्या कहलाती है।
2. वानप्रस्थ–गृहस्थाश्रम में निवास करने के पश्चात ब्रह्मविद्या की प्राप्ति हेतु जंगल में निवास करने वाले को वानप्रस्थी कहा जाता है।
3. व्रयृत– फैला हुआ ।
4. प्रपाठक – यह मैत्रायणी आरण्यक का भाग है।

2.8 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.ग 2.ग 3.घ 4. घ 5. क 6.ग 7.क 8. ख 9. क

2.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास–बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा प्रकाशन वारासी
2. वैदिक साहित्य का इतिहास –डॉ0 पारसनाथ द्विवेदी– चौखम्भा प्रकाशन वारासी
3. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास –बलदेव उपाध्याय, चौखम्भा प्रकाशन वारासी

2.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. आरण्यकों के प्रतिपाद्य पर एक निबन्ध लिखित।
2. आरण्यक का अर्थ बताते हुए किन्ही तीन आरण्कों का परिचय लिखित?
3. आरण्यकों के विषय विवेचन पर प्रकाश डालिए?